वर्ष –18 अप्रैल, 2022 अंक – 187

Regd. Postal No. Dehradun-328/2022-24
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

सत्य का महत्त्व	02	आपने कहा था	16
देववाणी	03	देव जीवन की झलक	19
सात अजूबे	04	माता–पिता के प्रति भाव प्रकाश	22
व्यवहार वीथी	06	श्रद्धा सुमन	27
परमदेव का संकेत	09	प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	30
देव आरती के पदों की व्याख्या	11	माता–पिता सन्तान व्रत	31
मंज़िलें और भी हैं	13	शोक समाचार	31

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकार ही में जीवन यह जावे।'

– देवात्मा

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : सुशान्त सुनील

For Motivational TalksèLecturesèSabhas :
Visit our YouTube channel : Shubhho Roorkee
www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता 100, सात वर्षीय 500, पन्द्रह वर्षीय 1000
मूल्य (प्रति अंक): 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

सत्य का महत्त्व

साँच बराबर तप नहीं, सूक्ति में सत्य की महता को स्वीकारा गया है। सच के मार्ग पर चलना अपने आप में तप है। तप का अर्थ है तपना। सच का मार्ग हमेशा कंटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सकता है। तप वही कर सकता है जिसका दिल साफ़, निष्पाप और एकाग्रचित हो। सत्य मानव दिल का गौरव का प्रतीक है। सच बोलने वाले के मुख पर एक अलग तरह का तेज़ रहता है, सोच रहती है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है व लोगों के दिल में जगह बनाता है। अप्रिय सत्य मनुष्य को कभी नहीं बोलना चाहिए। सत्य का पालन करने के लिए सत्यवादी हरिश्चन्द्र जी ने अपने जीवन को तपस्वी की तरह जीने पर मज़बूर हुए। तप और सत्य मिलकर मानव जीवन को विकास की राह पर अग्रसर करते हैं। सत्य की प्राप्ति ही कठोरतम तप है। यह संसार का वह सर्वोत्तम धर्म है जिसके बिना जीवन सारहीन हो जाता है। सत्य अटल है। लाख झूठ भी उसके समझ टिक नहीं सकते। झूठ बुलबुले की भान्ति है, जिसका अस्तित्व क्षणिक है। सच स्थाई है, चिरन्तर है। एक सच को छुपाने के लिए 100 झूठ बोलने पड़ते हैं और अन्त में सौ झूठों का आवरण भेद कर सच बाहर निकल ही आता है। सच से मानव जितना मुँह मोड़ता है, वह उतना पल-पल में सामने आता है। कठिन अवश्य है सत्य का मार्ग, लेकिन कल्याणकारी है।

जीवन संघर्ष

अगर कोई व्यक्ति बड़ा बना है, तो हमें विचार करना चाहिए कि उसने जीवन में कितना संघर्ष किया होगा।

जैसे कि किसी बड़े पेड़ की जड़ भी चारों तरफ़ फैली हुई व मजबूत होती है।

हिसाब-किताब

प्रकृति का हिसाब-किताब में कोई मुक़ाबला नहीं है, भौतिक विचार से हम सब यहाँ ख़ाली हाथ ही आए हैं और ख़ाली हाथ ही यहाँ से जायेंगे।

आत्मिक धन ही असल पूँजी है, जो हम साथ लाये थे व उसे बढ़ाकर या घटाकर साथ ले जायेंगे।

माँगने पर देना अच्छा है, लेकिन जरूरत अनुभव करके,
बिना माँगे देना और भी अच्छा है।

देववाणी

अब तुम यह देखो कि नीच अनुरागों और नीच घृणाओं में रहकर तुम हर समय मिथ्या में रहते हो। अहंअनुरागी हर वक़्त मिथ्या में रहता है। ऐसे हृदयों में देवात्मा के लिए अनुराग पैदा होने की कोई गुंजायश नहीं है। जो जन बरसों से अपने बच्चों को देवात्मा से बढ़िया महसूस करता है, वह मिथ्या में है। बीवी बड़ी है, बच्चा बड़ा है। इन सब बीवी-बच्चों के नीच अनुरागों में देवात्मा के प्रति बगावत का सामान मौजूद है। नीच सुख अनुरागी मनुष्य अपना गुरु आप है और इसका सबूत उसके जीवन में मौजूद है। जबकि नेचर ने मुझे तुम्हारा रहबर बनाया है और तुम मुझे अपना रहबर नहीं बनाते, तो तुम मिथ्या में रहते हो। नेचर ने जो कुछ तुमको दिया है, तुम उसको कुबूल नहीं करते।

– देवात्मा

क्या करें कष्ट देने वाली आदतों का?

आज से ही प्रयासरत रहें – लालच द्वेष, अपने अहम् व व्यर्थ की इच्छाओं का त्याग करें !

गुदगुदी

एक बार राजू गाड़ी में अपने जिगरी मित्रों के साथ पिकनिक पर जा रहा था। स्टीयरिंग उसी के हाथ में था।

गाड़ी के सामने के काँच से उसके मित्रों को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन वह सड़क के तमाम गढ्ढे बचाते हुए बड़ी सफाई से गाड़ी चला रहा था।

मित्रों ने हैरान होकर पूछा, "अरे यार, सामने काँच से कुछ भी साफ़ नज़र नहीं आ रहा। फिर भी गाड़ी इतनी परफेक्ट कैसे चला रहे हो?"

राजू, "क्या बताऊँ यारो! अपनी भूलने की आदत के कारण अब तक मेरे 1100 से ज़्यादा चश्मे गुम हो चुके हैं।"

मित्र, "हम ड्राइविंग के बारे में पूछ रहे हैं।"

राजू, "मूर्खों, वही तो बता रहा हूँ, चश्में बनवा-बनवाकर मैं हैरान परेशान हो गया तब.गाड़ी का काँच ही चश्मे के नम्बर वाला बनवाकर गाड़ी में लगवा लिया है।"

जो तुम्हारे पास है सब एक दिन दिया जायेगा इसलिए अभी दे डालें।

सम्पादकीय

सात अजूबे.....

संसार में जब अजूबों का जिक्र आता है, तो अकसर लोग उन सात इमारतों के बारे में बताने लगते हैं, जिन्हें देखने वाला हैरत में पड़ जाता है कि इन्हें कैसे बनाया गया होगा।

ये अजूबे हैं – आगरा (भारत) में ताजमहल, चीन की दीवार (Great wall of China), जार्डन का पेट्रा (Petra), ब्राजील में क्राइस्ट द रिडीमर, रोम का कॉलोसियम, दक्षिण अमेरिका में माचू पिच्चू एवं मेक्सिको में चिचेन इत्जा। पुराने वक़्त में इसी प्रकार की कुछ अन्य विशिष्ट इमारतें इस अजूबों की सूची में शामिल थीं।

आइये, उन अजूबों पर भी कुछ चिन्तन करें, जो प्रकृति माता ने हमें प्रदान किए हैं और वे हैं निम्न क्षमतायें –

1. पहला अजूबा है – To See - देख पाना। हमारी आँखें, उनकी संरचना कितना बड़ा अजूबा है। आँखों की सही क़ीमत उनसे पूछी जाए, तो देख नहीं सकते।
2. दूसरा अजूबा है – To Listen - सुन पाना। हमारे कान, उनकी संरचना कितना बड़ा अजूबा है। कानों की सही क़ीमत उनसे पूछी जाए, जो सुन नहीं सकते।
3. तीसरा अजूबा है – To Speak - बोल पाना। बोल पाने की क़ीमत उनसे पूछी जाए, जो बोल नहीं सकते।
4. चौथा अजूबा है – To Touch - छू पाना।
5. पाँचवां अजूबा है – To Smile - मुस्कुराना।
6. छठा अजूबा है – To Love - प्यार दे पाना।
7. सातवां अजूबा है – To Care - किसी का ख़्याल रख पाना।

ये सातों अजूबे कितने खूबसूरत हैं, क़ीमती हैं एवं वरदान हैं। ये अजूबे तब और ज़्यादा सकारथ व सफल हो जाते हैं, जब ये औज़ार बन जाते हैं, उच्च भावों का व सकारात्मक सोच का।

वस्तुतः देख तो हम किसी को नफरत से भी सकते हैं और सम्मान व श्रद्धा की आँख से भी। सुन तो हम चुगली भी सकते हैं और किसी का गुण चिन्तन भी। छू तो हम किसी को ग़लत भावना से भी सकते हैं और शुद्ध भावना व आशीर्वाद/स्नेह भाव से भी। बोल तो हम अपशब्द भी सकते हैं और सद्वचन भी। मुस्कुरा तो हम किसी को नीचा दिखाकर व रूलाकर भी सकते हैं और किसी की ख़ुशी में शामिल

यदि तुम पाना चाहते हो तो तुम्हें पहले देना चाहिए।

होकर व उसका दर्द/दु:ख घटाकर भी।

इसी प्रकार प्यार करने व ख़्याल रखने की क्षमता किसी स्वार्थ के वशीभूत भी हो सकती है और नि:स्वार्थ भी।

ये सातों क्षमतायें – देखना, सुनना, छूना, बोलना, मुस्कुराना, प्यार देना व ख़्याल रखना, हमारे जीवन में उच्च भावों के अधीन चलकर हमारे आत्मबल के वर्द्धन में सहायक हो सकें, ऐसी है शुभकामना!

– डॉ. नवनीत अरोड़ा

विचारणीय

कार्यकुशलता का पहला अंग तो यह है कि हम अपने कार्य को समझ से पहले निर्धारित कर उसे अच्छी तरह जाने। हममें से अधिकतर लोग कार्य करने का बीड़ा उठा तो लेते है पर उसे अच्छी तरह जानते और न ही जानने का यत्न ही करते हैं। जब सफलता नहीं मिलती तो अपने को दोष न देकर हम दूसरे को दोष देते हैं और बार-बार कार्य बदलते हुए बड़े सन्ताप में जीवन व्यतीत करते हैं। छोटे-बड़े सभी कामों में यह देखा जाता है हम लोगों में से अधिकतर लोग जा काम करते हैं उसमें पूरे तौर से योग्यता और निपुणता प्राप्त करने का यत्न नहीं करते। इसी से हमार काम पूरा नहीं होता और हमारे हाथ से सब काम निकलते जाने का यही कारण है कि दूसरे लोग उसी काम को ज़्यादा अच्छी तरह करते हैं और हम स्वयं उनके काम को अपने से ज़्यादा पसन्द करते हैं। यदि हम लोग अपने-अपने काम के एक-एक अंग को अच्छी तरह समझे और उसमें प्रवीण होने का सदा ख़्याल रखें, तो हम अपनी और अपने काम दोनों की बहुत कुछ वृद्धि और उन्नति कर सकते हैं। कार्य कुशलता छोटे और बड़े का भेद नहीं जानती। जो कार्य कुशल होगा, वह शुरू में कितना ही छोटा क्यों न हो अवश्य उन्नति करेगा और जो नहीं होगा, वह शुरू में चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, अवश्य गिरेगा इस कारण कार्य कुशलता का प्रधान अंग मेहनत है।

जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है उसे
तेरा बायां हाथ न जानने पाए, ताकि तेरा दान गुप्त हो।

गतांक से आगे.....

उत्तम व्यवहार के सूत्र

4. सहनशीलता – सहनशीलता का अर्थ है प्रतिकूल व्यवहार पाकर, किसी प्रकार की शारीरिक-आर्थिक हानि होने पर क्षुब्ध-उत्तेजित न होकर शान्त रहना। इतना ही नहीं जिनसे प्रतिकूल व्यवहार-अपमान मिला है या जिनके कारण किसी प्रकार की हानि हुई है उनके प्रति मन में वैर-विरोध भाव न रखकर सद्भाव रखना और उनके प्रति हितकामना-हितचिन्तन करना। यह तो कभी सम्भव ही नहीं है कि सबका सब बात-व्यवहार हमारे मन के अनुकूल ही हो, कहीं कुछ प्रतिकूलता आये ही नहीं। दुनिया में एक भी ऐसा व्यक्ति आज तक नहीं हुआ, जिसके जीवन में कभी कोई प्रतिकूलता न आयी हो। जिन्हें हम सन्त-सद्गुरु, महापुरुष, भगवान् कहते हैं वे भी प्रतिकूलता, अपमान, दुःख से नहीं बचे, किन्तु वे कभी इनसे घबड़ाये नहीं। सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं को निर्विकार भाव से सहन करने वाला ही किसी घर-परिवार, संस्था-समाज, राष्ट्र का ठीक ढंग से नेतृत्व कर सकता है और एक दिन वह सबका प्यारा, श्रद्धेय, सम्मानीय हो जाता है। छेनी-हथौड़ी की अनगिनत चोट सहकर न टूटने वाला पत्थर ही प्रतिमा बनकर मंदिर में प्रतिष्ठित होता है और पूजा जाता है, टूटकर बिखर जाने वाला पत्थर नहीं।

शान्ति-सुखपूर्वक जीना है और व्यवहार -परमार्थ का काम करते रहना है तो सहनशील होना ही पड़ेगा। लड़-झगड़कर कौन शान्ति-सुख से जीवन जी पाया है। ज़्यादातर तो अपने माने गये लोगों का ही सहन करना पड़ता है। घर-परिवार के सदस्यों के प्रतिकूल व्यवहार को सहन न किया जाये तो एक साथ घर-परिवार में रहना सम्भव ही नहीं होगा। सहन न कर लड़ने से तो काम बनेगा नहीं, और बिगड़ जायेगा।

सहनशीलता के लिए निहाई का उदाहरण लिया जा सकता है। लोहार लोहे के औजारों को गरमाकर निहाई पर रखकर पीटता है। उन औजारों का स्वरूप, आकार-प्रकार बदलता रहता है, परन्तु हज़ारों घनों की चोट पड़ने पर भी निहाई एकरस रहती है, उसका स्वरूप नहीं बदलता। इसी प्रकार जो सबकी चोट सहता है, फिर भी घबड़ाता नहीं है, वही सबको आश्रय देता है और उसी के जीवन में चमक आती है।

5. समता – समता का एक अर्थ है सुख-दुःख, हानि-लाभ, सम्मान-अपमान सभी स्थितियों में एकरस-शान्त रहना, विचलित न होना और दूसरा अर्थ है छोटे-बड़े, कम-अधिक योग्यता वाले, गुणहीन-गुणवान् सभी लोगों के प्रति समान रूप से प्रेमभाव

दानशीलता हृदय का गुण है, हाथों का नहीं।

रखना, सबकी आवश्यकता की समान रूप से पूर्ति करते रहना।

एक माँ कहती थी कि मेरी तीन बहुएं हैं और तीनों में आपस में सगी बहनों जैसा प्यार है। मुझे जब बहुओं के कपड़े या गहना खरीदना होता है तब तीनों के लिए एक साथ एक जैसा ही खरीदती हूँ। इसमें मैं कभी भेदभाव नहीं करती। तीनों बहुओं को मैंने कह दिया है कि तुम्हारे स्वास्थ्य में किसी प्रकार की गड़बड़ी हो या मन में किसी प्रकार का विकार या उत्तेजना हो तो भोजन न बनाना। क्योंकि शरीर या मन में कोई गड़बड़ी होने पर उसका प्रभाव भोजन पर पड़ेगा और उसका प्रभाव खाने वालों पर। मेरे इस व्यवहार से तीनों बहुओं का मन प्रसन्न रहता है और घर के सभी सदस्यों का मन-स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। यही समता का व्यवहार है।

घर-परिवार, संस्था-समाज में कोई विशेष प्रतिभा-सम्पन्न, योग्य, बुद्धिमान एवं परिश्रमी है और उसके द्वारा घर-परिवार, संस्था-समाज को विशेष लाभ हो रहा है, तो निश्चित ही उसे अधिक श्रेय दिया जायेगा, उसकी अधिक प्रशंसा होगी, परन्तु यह श्रेय और प्रशंसा इतना अधिक नहीं होनी चाहिए कि वह दूसरों की ईर्ष्या का कारण बने और दूसरों की उन्नति में बाधक हो। दूसरी तरफ कोई कम योग्यता का, कम बुद्धि का एवं कम परिश्रम करने वाला है तो उसकी ऐसी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए कि उसके अन्दर हीन भावना उत्पन्न होने लगे। अधिक प्रतिभासम्पन्न, योग्य, परिश्रमी को उचित श्रेय देते हुए सबके प्रति बराबर प्रेम व्यवहार होना चाहिए और सबकी आवश्यकताओं पर बराबर ध्यान देते रहना चाहिए, तभी घर-परिवार, संस्था-समाज की एकता बनी रहेगी।

6. सहानुभूति - सहानुभूति का अर्थ है साथ-साथ अनुभव करना, हमदर्दी। कब किसके जीवन में कैसा संकट, दुःख-दर्द आ जाये कुछ कहा नहीं जा सकता। किसी भी प्रकार का संकट, दुःख-दर्द आने पर आदमी दूसरों का साथ चाहता है। यदि उसके पास बैठकर उसकी बातों को धैर्यपूर्वक प्रेम से सुना जाये तो उसे सन्तोष मिलता है और यह लगता है कि मैं अकेला नहीं हूँ। मेरी विपत्ति में साथ देने वाले लोग हैं। सहानुभूति का अर्थ है पीड़ित व्यक्ति को यह अनुभव कराना कि हम तुम्हारे साथ हैं। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और विपत्ति-दुःख-दर्द को झेलने के लिए मानसिक रूप से वह अपने को समर्थ अनुभव करता है तथा घर-परिवार के सदस्यों के प्रति उसका विश्वास एवं प्रेम बढ़ता है।

7. समर्पण - जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ समर्पण की आवश्यकता न हो।

प्रकृति का यही नियम है कि जितना हम दूसरों के भले में काम आते हैं,
उतना ही फलते हैं।

समर्पण का अर्थ है अपने को गौण करके सामने वाले को श्रेय देना, उसका ख़्याल रखना। समर्पण के बिना परिवार-समाज में स्थायित्व आ ही नहीं सकता। जिस परिवार में पति पत्नी के प्रति, पत्नी पति के प्रति, माता-पिता पुत्र के प्रति, पुत्र माता-पिता के प्रति, एक भाई दूसरे भाई के प्रति, सास बहू के प्रति, बहू सास के प्रति, इसी प्रकार अन्य सब एक दूसरे के प्रति समर्पित रहते हैं, वहाँ किसी को किसी अभाव का अनुभव नहीं होता। सबका मन प्रसन्नता से भरा रहता है और ऐसा परिवार-समाज हर दिशा में उन्नति करता चला जाता है।

यहाँ यह समझना होगा कि बिना समर्पण के प्रेम टिक नहीं सकता है तो बिना प्रेम के समर्पण हो नहीं सकता। जिसके प्रति हमारे मन में अटूट एवं निश्छल प्रेम होता है वहाँ हम अपने आप समर्पित हो जाते हैं और जहाँ पूर्ण समर्पण है वहाँ प्रेम का पूर्ण प्रकटीकरण हो जाता है। और जहाँ प्रेम एवं समर्पण है वहाँ किसी प्रकार का दुराव-छिपाव, कलह, विवाद, स्वार्थ-अहंकार रह ही नहीं जाता है। वहाँ तो रहती है सेवा, कर्तव्यपरायणता, करुणा, एकता, समता और रहती है मन की प्रसन्नता एवं शान्ति।

साभार 'पारख प्रकाश' – धर्मेन्द्र दास

विचारणीय

संसार में कोई काम झूठ बोलने से नहीं चल सकता। झूठ की उत्पत्ति पाप कुटिलता और कायरता से होती है। झूठ बोलना कई रूपों में दीरव पड़ता है, जैसे चुप रहना, किसी बात का बढ़ा-चढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, झूठ-मूठ दूसरों की हाँ में हाँ मिलाना आदि। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो मुँह देखी बातें बनाया करते हैं, पर करते वही हैं जो उन्हें ठीक लगता है। ऐसे लोग मन में समझते हैं कि कैसे सबको मूर्ख बनाकर हमने अपना काम कर लिया, पर वास्तव में वे अपने को ही मूर्ख बनाते हैं और अन्त में उनकी पोल खुल जाती है। समाज के लोग उन्हें घृणा करते हैं।

दुःख को भूल जाने से दुःख मिट जाता है।

परमदेव का संकेत

लौरेंस नाम का एक अंग्रेज़ था, जो ज़िन्दगी भर अरब में रहा। रेगिस्तान की ज़िन्दगी उसे बहुत पसन्द थी। बहुत से अरब उसके अच्छे मित्र थे। एक बार पेरिस में प्रदर्शनी लगी, तो लगभग दर्जन भर अरब मित्रों को, जो कभी अरब से बाहर नहीं गए थे, वो अपने साथ पेरिस ले गया प्रदर्शनी दिखाने के लिए। उसने उन सबको एक शानदार तथा प्रतिष्ठित होटल में ठहराया। लेकिन लौरेंस एक बात से अचंभित था, कि वे जो अरेबियन थे, वे न प्रदर्शनी में रस ले रहे थे और न ही किसी और चीज़ में। जहाँ ले जाओ, बस वो कहें कि जल्दी करो, होटल वापस चलें। और जैसे ही वो सब होटल पहुँचते, सीधे बाथरूम में घुस जाते। लौरेंस ने सोचा मामला क्या है ? जब उसने परीक्षण किया, तो पाया कि वे सब अपने अपने बाथरूम में टोंटी खोलकर या तो बहते हुए पानी के फव्वारे को देखते या उसके नीचे खड़े हो जाते। ऐसा करने में उन अरबों को बड़ा आनन्द आता था। बड़ी भव्य प्रदर्शनी थी, लेकिन उनका रस तो नल की टोंटी में था, क्योंकि रेगिस्तान के लोग थे, पानी का अभाव देखा था। और इस तरीके से पानी तो कभी देखा ही न था उन्होंने। फिर जिस दिन वापसी थी, तो रेलवे स्टेशन ले जाने के लिए कारें आ गईं। सारा सामान कारों में लद चुका था, लेकिन देखा तो सब अरेबियन फिर से गायब थे। देर हो रही थी, लौरेंस भागा बुलाने के लिए, तो देखा कि वो लोग अपने-अपने बाथरूम की टोंटियां साथ ले जाने के लिए खोल रहे थे। लौरेंस ने समझाया, अरे नासमझो टोंटी तो तुम ले जाओगे, लेकिन पानी कहाँ से लाओगे। भीतर पानी का स्रोत भी तो होना चाहिए। कमबख्तों पानी टोंटी से नहीं आ रहा है, टोंटी से तो सिर्फ़ निकल रहा है, आ तो भीतर के स्रोत से रहा है।

दोस्तो ! लौरेंस की इस कहानी में एक महत्त्वपूर्ण भेद छुपा है कि हम सब भी टोंटियों की तरह ही हैं। हम जो भी करते हैं, उनके लिए हम टोंटी जैसे ही हैं। हम जब किसी को प्रेम करते हैं, तो उसको हम गले तो लगाते हैं, परन्तु हमारे भीतर से प्रेम का जल नहीं बहता, क्योंकि भीतर प्रेम का स्रोत या तो है ही नहीं या क्रियाशील नहीं है। भीतर प्रेम का दरिया ना हो, तो हम गले तो लगा लेंगे, लेकिन होगा क्या ? शरीर से शरीर मिलेगा, चमड़ी चमड़ी को छूएगी, लेकिन प्रेम का कोई आदान-प्रदान नहीं होगा, प्रेम का फव्वारा भिगो नहीं पाएगा। हम टोंटी तो खोल देंगे, लेकिन प्रेमरूपी जल की एक बूंद भी ना टपकेगी, जो है ही नहीं। स्रोत बाहर कैसे छलकेगा क्योंकि पहले भीतर होना भी तो चाहिए, फिर उसकी अभिव्यक्ति होती है। ऐसे में किसी भी प्रकार

कमज़ोरी का इलाज कमज़ोरी की चिन्ता करना नहीं,
पर शक्ति का विचार करना है।

का व्यवहार या तो मात्र कृत्य या मात्र अभिनय मात्र ही हो सकता है, उस कृत्य की अभिव्यक्ति नहीं। सच्ची अभिव्यक्ति तो तभी होगी, जब हममें वो स्रोत होगा अर्थात् हम परमदेव रूपी स्त्रोत से जुड़े होंगे और जब हम उस परम स्रोत से जुड़े होंगे, तो हमारे प्रत्येक कृत्य में उसकी अभिव्यक्ति स्वयं ही होगी, अन्यथा हम खाली टोंटी ही रह जाएंगे। हम सबके जीवन की लगभग यही व्यथा है। जो उस स्रोत से जुड़ जाता है, उसका हर संकेत परमदेव का संकेत हो जाता है। फिर वह जो करता है, वह सब पूजा हो जाता है।

मेरे सुधि मित्रो ! उपरोक्त लेख मुझे फेसबुक से प्राप्त हुआ है, जिसके लेखक का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इस लेख के माध्यम से हम सबके लिए जो महान् सन्देश मिलता है, वह कदाचित यह है कि हम जीवन्त रूप में अपने भगवान् से निरन्त जुड़े रहकर उसके अमृतरस को प्राप्त करते रहें, आत्म कल्याण के लिए प्रयासरत रहें, तथा अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक अस्तित्व के लिए सच्चे अर्थों में हितकर बन सकें।

काश ! हम सब अपने आत्महित के आकांक्षी बन सकें !!

– देवधर्मी

आहत होने का कारण

We are easily hurt because we try to read too much into people's actions and words, and we think too far ahead in time.

हम आसानी से आहत हो जाते हैं क्योंकि हम लोगों के कार्यों और उनके शब्दों को ज़रूरत से बहुत ज़्यादा समझने की कोशिश करते हैं और हम बहुत आगे की सोचते हैं।

इस आदत में थोड़ा सा बदलाव लाकर तो देखना ही चाहिए।

तेरे दुःख से कहीं कठिन दुःख यह जग मौन सहा करता है।

देव आरती के पदों की व्याख्या

गतांक से आगे

'देव आरती' के नवें पद में लिखा है –

"जय एक उपास्य सभों के, जय आत्मतत्व ज्ञाता,
सत्यधर्म के शिक्षक, पूर्ण हितकर्ता।"
जय जय देवगुरु।

उपर्युक्त पद में यह स्पष्ट किया गया है कि एकमात्र भगवान् देवात्मा ही आध्यात्मिक जगत् के देवसूर्य हैं। वह ही सब मनुष्यों के द्वारा पूजा किए जाने के योग्य हैं, क्योंकि एक सत्य उपास्य में जितनी योग्यताएं होनी चाहियें, वे सब मात्र देवात्मा के भव्य आत्मा में ही वर्तमान हैं।

भगवान् देवात्मा विश्व में एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनकी आत्मिक गठन पूर्ण है। उनके आत्मा में पूर्णतः नवीन, अति महत्त्वपूर्ण एवं परमावश्यक देव शक्तियाँ, जिनसे सारी मानवता पूरी तरह वंचित है तथा अनभिज्ञ भी है, पूर्ण विकसित अवस्था में वर्तमान हैं। पूर्ण गठनप्राप्त आत्मा होने के कारण देवात्मा मनुष्य मात्र की सारी आत्मिक दुर्बलताओं से पूरी तरह मुक्त हैं। वह सत्यधर्म एवं आत्मिक सत्यज्ञान के मर्मज्ञ हैं। देवात्मा अद्वितीय धर्मज्योति एवं आध्यात्मिक बल से पूरी तरह सम्पन्न हैं। वह सब जानदार एवं बेजान अस्तित्वों का हर प्रकार से परमहित साधन कर सकते हैं तथा करते हैं। अतः ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व के साथ पूजा के माध्यम से योग करने में किसी जन के पतित होने की लेशमात्र शंका नहीं होती। इसके विपरीत यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति की पूजा करते हैं, जो उच्च गुणों से चाहे कितना ही सुसज्जित क्यों न हो, यदि उसमें लेशमात्र भी मानवीय दुर्बलता है, तो ऐसी दुर्बलता अर्थात् दोष उसके पुजारी में भी अवश्य आ जाता है। भगवान् देवात्मा की पूजा करने से उनके भक्त में इस तरह के किसी दोष के उत्पन्न होने की लेशमात्र शंका नहीं है।

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा को सत्य उपास्य होने की पदवी प्रकृतिमाता (Nature) ने प्रदान की है, किसी मनुष्य ने नहीं क्योंकि देवात्मा ने विकासक्रम के गर्भ से जन्म लिया है, जिसने सब दोषों से पूर्णतः मुक्त एवं धर्ममूलक सब योग्यताओं से सुसज्जित करके देवात्मा को इस धरा पर आविर्भूत किया है। देवात्मा का धरा पर आविर्भूत होना प्रकृति की बहुत advanced stage की अद्वितीय घटना है, जिसको इस प्रारम्भिक चरण में समझ पाना सारी मानवता के लिए अभी सम्भव नहीं है। फिर भी वह जन बहुत सौभाग्यवान है, जिसे इस आरम्भिक काल में ही देवात्मा की धर्मशिक्षा

मैं समझता था कि दुःख मुझे ही है, मगर दुःख तो सारी दुनिया को है। जब ऊँचे चढ़कर मैंने देखा तब मैंने पाया कि यह आग तो हर घर में लग रही है।

लाभ करने का सुअवसर प्राप्त हो जाए।

काश ! सत्य उपास्य रूप में देवात्मा के प्रकट होने के इस निराले तथा सत्य-चमत्कार के रहस्य को हम सब समझ सकें तथा अपने आत्म कल्याण के मार्ग को अपना सकें !!

'देव आरती' के दसवें एवं अन्तिम पद में लिखा है -

"जय अतुल दान के दाता, जय देवरूपधारी,
दान तुम्हारा पाकर, धन्य हों नर-नारी।"
जय जय देवगुरू।

इस पद के भव्य शब्दों से यह परिलक्षित होता है, कि भगवान् देवात्मा ने 'धर्मजगत रूपी' जिस भव्य आध्यात्मिक तीर्थ का सृजन किया है, उस पर आकर किसी महा सौभाग्यशाली जन को भगवान् देवात्मा का वह 'देव-प्रसाद' लाभ हो सकता है तथा होता है, जिसके विषय में सारा मानव-जगत पूरी तरह अनभिज्ञ है, तथा इस अनभिज्ञता के कारण नीच जीवन व्यतीत करते-करते एवं दारुण दुःख उठाते-उठाते अपना तथा औरों का विनाश करते हुए आत्मिक मृत्यु पाने हेतु अभिशप्त है।

वह अद्वितीय देवप्रसाद जो देवात्मा हमें प्रदान करते हैं, यह है उनके अद्वितीय देवजीवन का अमूल्य 'सार तत्व' अर्थात् उनकी अनुपम आध्यात्मिक ज्योति एवं आध्यात्मिक बल से सम्पन्न उनके देवप्रभाव अर्थात् उनका देवामृत, जिसका पान करके कोई अधिकारी जन जीवन में वह-वह उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकता है तथा करता है, जिनका लाभ करना सभी मनुष्यात्माओं के लिए परमावश्यक हैं, जिनको लाभ किये बिना किसी मनुष्य के सार अस्तित्व अर्थात् आत्मिक जीवन का पूर्णतः विनाश हो जाना सुनिश्चित है।

काश ! हम सब भगवान् देवात्मा के देवप्रभाव अर्थात् उनके देवामृत को वास्तव में लाभ करने के अधिकारी बन सकें !!

- देवधर्मी

सामर्थ्यशाली व्यक्ति के लिए कौन वस्तु भारी है? परिश्रमी के लिए
कौन सा स्थान दूर है? विद्वान के लिए क्या विदेश है?
और प्रियभाषी के लिए कौन पराया है।

जीवन की दुर्घटनाओं में अकसर बड़े महत्त्व के
नैतिक पहलु छिपे हुआ करते हैं।

मंज़िलें और भी हैं

यौनकर्मियों के बच्चों को नया जीवन दे रही हूँ

वह वर्ष 1993 की बात थी। पुणे और उसके आसपास एचआईवी/एड्स की बीमारी फैलने की सूचनाएं आनी शुरू हो गई थी। उसी दौरान मैंने अपना सामाजिक संगठन 'कायाकल्प' शुरू किया। इसके बाद एचआईवी/एड्स का पता लगाने और जागरूकता के लिए मैं सरकार की शोध टीम में शामिल हो गई, जिसके तहत यौनकर्मियों के लिए काम करने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई। मैं पुणे में ही रहती हूँ। पढ़ाई के समय से ही मेरा झुकाव सामाजिक कार्य को लेकर था। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने कई साल तक कुष्ठ रोगियों के साथ काम किया। शोध अभियान के दौरान मैं एक बार बुधवार पेठ(पुणे शहर के केन्द्र में एक लाल-बत्ती क्षेत्र) गई। वही मैंने यौनकर्मियों की दशा देखकर उनके कायाकल्प के लिए काम करना शुरू किया। जब मैंने अपने पति से कहा कि मैं रेड-लाइट एरिया में काम करूँगी, तो उन्होंने कहा कि वहाँ कई तरह की चुनौतियाँ होंगी, अगर मैं वास्तव में इस क्षेत्र में काम करना चाहती हूँ, तो मुझे उन सब चुनौतियों को पार कर लक्ष्य तक पहुँचना होगा, मैंने ठीक यही किया। जब एक वयस्क के रूप में मैंने पहली बार वहाँ कदम रखा, तो मुझे अचानक याद आया कि बचपन में मेरे पिता उस रास्ते से होकर खरीददारी कराने ले जाते थे।

मुझे अब भी याद है कि कैसे जब हम उस रास्ते को पार करते थे, तो वह मेरे हाथ को कसकर पकड़ लेते थे। अब, मुझे इसका कारण पता चला, मैं इसे हमेशा के लिए बदलना चाहती थी।

जब मैंने बुधवार पेठ के उस इलाके में जाना शुरू किया, तो मैंने महसूस किया कि एक ऐसे समुदाय, जो वर्षों से वहाँ कैद है, शोषण हो रहा है, उसके लिए चिकित्सा सहायता और जागरूकता पर्याप्त नहीं है, उनके प्रशिक्षण, जागरूकता और पुनर्वास की व्यवस्था करनी होगी। लेकिन यह काम इतना आसान नहीं था। क्योंकि किसी की आजीविका का मुख्य स्रोत बन्द करने से उसका कायाकल्प नहीं हो सकता। मैंने देखा कि वहाँ की अधिकांश महिलाएँ इस व्यापार की शिकार हो गई हैं। साथ ही विभिन्न एजेंटों द्वारा उन पर दबाव डाला जाता था कि वे इसे जारी रखें, इसके बाहर का जीवन उनका भ्रम है। मुझे एहसास हुआ कि दुनिया में उनका भरोसा ख़त्म हो गया था और मुझे उसे कायम करने के लिए पूरी कोशिश करनी पड़ी। पर लगातार कोशिशों के बाद आख़िरकार, मैंने उनका विश्वास हासिल किया और दस हज़ार से अधिक यौनकर्मियों को सशक्त बनाकर वहाँ से निकालने में सफल रही।

दुर्दशा शत्रुओं के मन में भी मैत्री भाव ला देती है।

उनमें से कई ने ब्यूटीशियन और टेलर्स जैसे वैकल्पिक व्यवसायों का विकल्प चुना। कायाकल्प अभियान के दौरान मैंने देखा कि व्यावसायिक यौनकर्मियों को हमारा समाज सार्वजनिक कार्यों में स्वीकार ही नहीं कर रहा था। क्योंकि समाज को यह नहीं पता होता कि वे महिलाएं अपनी मर्जी से रेड लाइट एरिया में नहीं रहती हैं। एक बार जब वे वहाँ पहुँच जाती हैं, तो निकलने की गुंजाइश ख़त्म हो जाती है। मैंने तय किया कि उन महिलाओं के साथ वहाँ रहने वाले बच्चों को बाहर निकालना है। हम बच्चों को उनकी माताओं से अलग नहीं करते हैं। लेकिन हम सिर्फ़ इतना चाहते हैं कि वे इन क्षेत्रों से दूर रहें। हमारे पास बच्चों के लिए एक पुनर्वास केन्द्र है, जो पुणे से दूर है, ताकि हम उन्हें उनकी पसन्द का नया जीवन प्रदान कर सकें। मैं उन्हें वह जीवन देना चाहती हूँ जो मेरे बच्चों के पास है। हम बच्चों को पढ़ाने के साथ उन्हें उस काम के लिए प्रशिक्षित करते हैं, जिसे वे करने में रुचि रखते हैं। हमने उनके समान अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी है। क्योंकि जब तक वे अपने अधिकारों को नहीं जानते, वे अपने लिए नहीं खड़े हो सकते।

साभार 'अमर उजाला' – डॉ. सीमा वाघमारे

हँसी का महत्त्व

हँसी एक शक्तिशाली दवा है। डाक्टर कहता है कि आनन्द से बढ़कर बहुमूल्य वस्तु मनुष्य के पास और नहीं है। कॉलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हँसता है वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हँसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हँसाओ, वह बहुत प्रसन्न होगा। शत्रु को हँसाओ तुमसे कम घृणा करेगा। एक अनजान को हँसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हँसाओ, उसका दुःख घटेगा। निराश को हँसाओ, उसकी आशा बढ़ेगी। एक बूढ़े को हँसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हँसाओ उसकी सेहत अच्छी होगी। वह प्रसन्न और प्यारा बच्चा बनेगा। पर हमारे जीवन का उद्देश्य हँसी नहीं है। हमें काम बहुत करने हैं तथापि उन कामों में कष्टों में चिन्ताओं में, एक सुन्दर आन्तरिक हँसी बड़ी प्यारी वस्तु हमें मिली है। हँसी सबको भली लगती है। जो मनुष्य हँसते नहीं उन्हें कुदरत बचाए। हँसी बैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी है। हँसी स्वभाव को अच्छा करती है। बुद्धि को निर्मल करती है। इसलिए खूब हँसो और दूसरों को खूब हँसाओ।

दुर्भाग्यशाली मनुष्य शत्रु को मित्र समझने लगता है तथा मित्र से द्वेष करने लगता है और उसे मारता है, शुभ को अशुभ तथा पाप को कल्याणकारी समझता है।

हमारी आदतें

बड़े सौभाग्यवान हैं वो जन, जो जीवन में अच्छी आदतें अपनाकर अपना व दूसरों का विकास एवं हित साधन करते हैं। और ये अच्छी आदतें पनपती भी तभी हैं, जब स्वयं पर कड़ी निगरानी रखी जाए तथा इन्हें स्वयं में डालने का सतत् प्रयास किया जाए। हम एक बात अकसर सुनते हैं– **Practice makes a man perfect** यानि अभ्यास किसी इन्सान को पूर्णता की ओर ले जाता है। परन्तु यह बात पूर्णतः सही नहीं है। वस्तुतः सही चीज़ का अभ्यास ही आपको पूर्णता की ओर ले जाएगा, किन्तु ग़लत चीज़ का अभ्यास आपको विनाश की ओर ले जाएगा। यानि **Positive Practice will make you perfect and Negative Practice will make you imperfect.**

इसलिए यह गम्भीर आत्मचिन्तन एवं आत्म विश्लेषण का विषय है कि हममें किस प्रकार की आदतें विकसित हो रही हैं– अच्छी या बुरी, सकारात्मकता से भरपूर या नकारात्मकता से, वो विकासकारी हैं या विनाशकारी? वो हमारे आत्मा के बल को बढ़ाने वाली हैं या घटाने वाली हैं?

इन आदतों के विषय में एक स्मरणीय तथ्य और भी है– **A Positive Habit comes with difficulty but is easy to live with and a Negative Habit is easy to adopt but difficult to live with** यानि जीवन में अच्छी आदतें अपनाने में तो मुश्किल आती है, किन्तु उनके संग जीवन जीना बहुत आसान हो जाता है तथा बुरी आदतें जीवन में सहजता से आ जाती हैं, किन्तु उनके संग जीवन गुज़ारना दूभर हो जाता है।

किसी ने कितना सही कहा भी है– 'आदतां जांदियां कब्र दे नाल'। यानि आदतें कब्र के साथ जाती हैं। निस्सन्देह आदतें मरते दम तक नहीं छूटती। इसलिए विवेकशील व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बनता है कि स्वयं पर कड़ी निगरानी रखे, कहीं कोई बुरा अभ्यास तो नहीं बढ़ रहा और उसे आदत बनने से पहले ही रोकें।

धन्य हैं वो आत्मा, जो स्वयं पर चौकसी रखते हुए बुरी आदतों से स्वयं की रक्षा कर पाते हैं तथा अच्छी आदतों को अपनाकर जीवन को सच्चे अर्थों में सफल बना पाते हैं। निस्सन्देह बड़े सौभाग्यवान हैं ऐसे आत्मा, जो किसी सकारात्मक सोच के धनी व्यक्ति व वातावरण से जुड़कर अथवा स्वयं के प्रयास से अपनी आदतों में सकारात्मक परिवर्तन ला पाते हैं। हम सभी ऐसे धन्य व सौभाग्यवान आत्मा बन सकें, ऐसी है शुभकामना!

– नयी सोच नया सवेरा

दुःख का एक क्षण युग के बराबर होता है

आपने कहा था

.....गतांक से आगे

दिनांक : 22.12.1923

आज सुबह पूजनीय भगवान् सैर को जाने लगे तब उनके सैकड़ों सेवक दर्शनों के लिये खड़े हुए थे। मगर शोक! कि हमारी नालायक़ी की वज़ह से कोई ऐसी बातचीत न चल सकी, जिससे आत्माओं का हित साधन होता। इसलिये बस केवल यह शब्द कहकर कि 'सबको मिलकर ख़ुशी हुई है' सैर को तशरीफ़ ले गये। मगर सैर को जाकर बहुत उदास रहे कि मिलना सुफ़ल न हुआ। वापस आने पर श्रीमान् जानकी दास जी, श्रीमान् बख्शी जी, श्रीमान् मुरलीधर जी और मुझे बुलाया और इस विषय में अपनी तकलीफ़ का प्रकाश किया और फ़रमाया कि श्रीमान् देवत्व सिंह जी आत्माओं को हम तक पहुँचा दिया करते थे। अतः वह देवात्मा और अधिकारी आत्माओं के बीच अच्छे मीडियम थे। अब इस पहलु में आत्माओं का कोई जन मददगार नहीं। भगवान् ने फ़रमाया कि किसी के मुँह से भी कोई शब्द क्यों न निकले। कोई सेवक ही आगे बढ़कर कह देता कि भगवान्! आपसे मिलकर ख़ुशी मिली है, फिर हमारी बात चल पड़ती। भगवान् ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि अधिकारी आत्माओं को देवात्मा तक पहुँचाया जाए।

मेरे यह लिखकर देने पर कि अगर आप आज्ञा दें तो दिन में आपके श्री चरणों में पहुँचूँ। भगवान् ने फ़रमाया कि हम तो हर समय और हर हाल में मौक़ा देने के लिए तैयार हैं। सिर्फ़ शर्त यह है कि मिलने वाला यह साबित करे कि जब वह मिलने के लिये आता है तो उसका मिलना ज़रूरी और हितकर है। ग़लती माफ़ हो सकती है। लेकिन उसे यह समझ लेना चाहिये कि वह यूँ हीं अपनी 'मैं' से परिचालित होकर न आता हो।

भगवान् ने श्रीमान् गुरवन्त सिंह जी के द्वारा कहलवाकर भेजा कि मैं दो बजे मिलूँ।

दो बजे जाने पर महोत्सव के सम्बन्ध में धन सम्बन्धी सभा के सम्बन्ध में कुछ बातें पेश करने पर फ़रमाया कि उसकी बेहतरी के लिये जो कुछ हो सकता है, वह किया जावे। (कुछ देर कीर्तिन किया जा सकता है) फिर भगवान् ने कई और पहलुओं में ध्यान फेरा कि रुपया तो हाथ में आता है लेकिन आत्माओं को जो अब तक हाथ में हैं, बनाने का काम करने की सबसे पहली ज़रूरत है। उनको बनाने वाला कोई नहीं। पहले कोई ख़ुद बने और फिर बनाने का काम करें। भगवान् ने इस बात पर अपनी ख़ुशी का प्रकाश किया कि कितने ही जन नाना प्रकार का त्याग करके यहाँ पहुँचे हैं।

जिस प्रकार दीवार पर फैंकी गेंद अपने ऊपर आ गिरती है, उसी प्रकार
दूसरे के लिए चाही हुई हानि अपने ऊपर आ पड़ती है।

दिनांक : 06.01.1924

पूजनीय भगवान् ने कर्मचारियों को प्रातः 07:00 बजे अपने श्री चरणों में बुलाया और फ़रमाया कि तुम्हारे जो सम्मिलित साधन होते हैं, क्या वह भली भान्ति चलते हैं।

भगवान् ने अपने जीवन की एक घटना सुनाई कि मिस्टर ह्यूम मेरी एक बात पर हँस पड़े थे क्योंकि वह यूरोपियन थे और जब वह थियोसोफिस्ट लोगों के सम्पर्क में आये तो वह वेदान्ती बन गये थे। जब मैं उनको शिमले में मिला, तब वह वेदान्ती थे। तब उन्होंने मुझ से कहा कि मैं वेदान्ती हूँ। मैंने उनको कहा कि मिस्टर ह्यूम क्या आप यह समझते हैं कि आप और मैं दोनों एक ही हैं। तब वह हँस पड़े। (वेदान्त मत की यह शिक्षा है कि सब अस्तित्व एक ही ब्रह्म हैं।)

भगवान् ने फ़रमाया कि क्या मैं और सोनपार एक हैं? देवात्मा की जो जरूरत है दुनिया को वह यह कि अगर कोई रिश्वत लेता है और जानता है कि मैं रिश्वत लेता हूँ, और अगर कोई चोरी करता है और जानता है कि मैं चोरी करता हूँ, तो उनमें रिश्वत और चोरी के प्रति जो आकर्षण है, वह विकर्षण के रूप में बदल जाए। देवात्मा इसलिये आया है कि आत्माओं की सत्य मोक्ष हो।

साधन चलने से यह मतलब है कि कोई बुराई थी कि जो घृणित महसूस होती है और घृणा का सिलसिला बढ़ा है।

फर्ज़ करो कि दानवीर जी की वसीयत का पाठ किया और पाठ करके यह भी कह दिया कि दान करना अच्छा काम है। लेकिन ख़ुद क्या करते हो? ख़ुद कुछ न किया। बल्कि पाठ करके या सुन के उठ खड़े हुए। दान करने का भाव कुछ न पैदा हुआ। (तो फिर पाठ से क्या हासिल हुआ।) एक-एक जन नीच रागों और नीच घृणाओं से बन्धा हुआ है, इसलिये सभाओं में बैठकर उठ आता है। (जिन्दगी में उच्च परिवर्तन कुछ नहीं आया। ऐसे पाठ और साधन का कुछ लाभ नहीं।)

दिनांक : 04.02.1924

पूजनीय भगवान् ने फ़रमाया कि विविध क्षेत्रों में जिन-जिन विषयों में शिक्षा देने के लिए फैसला किया गया है, क्या कर्मचारी आदि उन विषयों में कोई जानकारी रखते हैं? क्या वह विभिन्न मज़हबों, उनके रस्मों रिवाज आदि के विषय में जानकारी रखते हैं ताकि उनकी असलियत उपस्थित जनों पर खोल सकें? क्या वह अनुष्ठान करा

वही समाज सुखी रह सकता है, जिसने नैतिक गुणों को अपने
जीवन में आत्मसात् कर लिया है।

सकते हैं? इत्यादि।

दूसरे जो ऑफिशल कागजात हैं या चिट्ठियाँ वगैरह हैं, वे सब ऑफिस में मौजूद होनी चाहिये। वह किसी सेवक के घर में रखे जाने के लिये नहीं हैं।

दिनांक : 04.02.1924

पूजनीय भगवान् ने श्रीमान् मुरलीधर जी और श्रीमान् सेवा सिंह जी को और मुझे बावजूद अपनी निहायत खराब सेहत के बुलाया, ताकि वह साक्षात् तौर पर हमें कुछ बतावें।

श्रीमान् लाला मुरलीधर जी की तरफ से भगवान् की ख़राब सेहत के सम्बन्ध में अफ्सोस का इज़हार करने पर भगवान् ने फ़रमाया कि अगर तुम यह इज़हार न करो तो क्या हर्ज है, और फिर कामना कर देने का क्या फायदा? क्या देवात्मा के साथ तुम्हारा कुछ सम्बन्ध है?

भगवान् ने मुझे सम्बोधन करके फरमाया कि तुम्हारी दोनों पर्चियाँ मिल गई है(जिनमें से एक में विकासार्थियों वगैरह की तरफ से हमदर्दी और धन्यवाद का प्रकाश था और दूसरी में मेरी अपनी तरफ से) मैंने यह भी लिखा था कि अज़ीज़ सुशील की बीमारी के कारण छूत की वजह से आपके पास आना जाना मना हो, तो मैं मिलना छोड़ सकता हूँ और चाहता हूँ कि आप मुझे अपने इर्द-गिर्द फिरने और छोटी-मोटी सेवा करने और आपकी हालत को आँखों से देखने और दिल के दु:ख को खुद जानने का उच्च अधिकार देने की कृपा करें।

इस पर भगवान् ने फ़रमाया कि तुम्हारी आकाँक्षा अच्छी है। और हम ख़ुद भी चाहते हैं कि हमें कोई ऐसे आत्मा मिलें कि जो इस किस्म के भाव रखते हों। लेकिन अब तुम्हारा बच्चा बीमार है और तुम्हारी उधर डियूटी है इसलिए वह पूरी करनी चाहिये। अगर भाव होगा तो उसके बाद भी तुम ऐसा मौका निकाल सकते हो। बाकी हम अपनी तरफ से किसी को कुछ नहीं कहते कि तुम यह करो या वह करो, क्योंकि हम अपनी तरफ़ से ऐसा करना आत्म सम्मान के खिलाफ समझते हैं। जो उपकार भी हम किसी पर करते हैं, वह भी इसलिये नहीं कि हम उसके बदले में कुछ लेना चाहें। (भगवान् किसी से सेवा लेते हैं तो वह भी केवल इसलिए कि उस सेवा से उसका भला हो।)

श्रीमान् निर्मल सिंह जी की डायरी

– क्रमशः

श्रेष्ठ व्यक्ति का सम्मान करके उन्हें अपना बना लेना
दुर्लभ पदार्थों से भी अधिक दुर्लभ है।

देव जीवन की झलक

एक रिटायर्ड मुसलमान सेशन जज साहिब सन् 1924 ई. में गर्मियों के मौसम में सोलन में गए हुए थे। वह परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के पुराने शागिर्द थे; और उस ज़माने में पूजनीय भगवान् के जीवन के जो विशेष उच्च प्रभाव उनके जीवन पर पड़े थे, उनके कारण वह भगवान् देवात्मा पर बहुत श्रद्धा रखते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि उनके माननीय शिक्षक (श्री देवगुरु भगवान्) भी सोलन में ही निवास करते हैं, तब उन्होंने पूजनीय भगवान् के दर्शन करने की प्रार्थना की। उन दिनों जीवनदाता भगवान् का शारीरिक स्वास्थ्य इतना ख़राब था कि उनके लिए एक-एक समय थोड़े से शब्द उच्चारण करना भी बहुत कठिन हो रहा था; परन्तु जब हितस्वरूप भगवान् देवात्मा को अपने पुराने शागिर्द की प्रार्थना का पता लगा, तब उन्होंने शीघ्र ही उन्हें कहला भेजा कि थोड़े दिनों में जब कुछ भी उनकी सेहत में बेहतरी आ गई और वह मिलने के योग्य हुए, तब वह फिर उन्हें पता देंगे। पूजनीय भगवान् की अति मूल्यवान स्वास्थ्य में जब थोड़े दिनों में कुछ बेहतरी आ गई, तब उन्होंने अपने एक सेवक को एक खास सन्देशा देकर अपने पुराने शागिर्द के पास भेजा कि जो अपनी बहुत बड़ी विशेषता रखता था। हम लोग जिन्हें परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के पवित्र श्री चरणों में हाज़िर होने का सौभाग्य प्राप्त रहा है, भली-भान्ति जानते हैं कि पूर्ण सत्य और हित अनुरागी देवात्मा के भीतर अन्य नाना उच्च बोधों के अति सुन्दर रूप में वर्तमान होने के भिन्न समय के सम्बन्ध में सच्चा रहने का बोध भी कितना गहरे रूप में वर्तमान है। उनके निकट दो बजे का अर्थ दो बजे ही है। दो बजकर एक मिनट भी उनके निकट दो बजे नहीं है। वह अपनी सारी आयु में समय के सम्बन्ध में हज़ारों अवसरों पर अपनी तरफ़ से सदा सच्चे रहे हैं। और यदि कोई दूसरा जन उनके साथ मिलने वा किसी और काम के सम्बन्ध में कोई समय नियत करके उसमें सच्चा न रहे, तब उनके देव हृदय पर अत्यन्त गहरा आघात लगता है, और वह उससे बिलबिला उठते हैं, परन्तु देवात्मा अपनी सारी आयु के कड़वे तजरुबे के आधार पर इस विषय में अपने देशवासियों की हीनता को भली भान्ति जानते हैं। यह बात उनसे छिपी हुई नहीं है, कि साधारण भारतवासियों को छोड़कर हमारे देश के बहुत विख्यात और बड़े-बड़े राजनैतिक, मज़हबी और सामाजिक नेताओं तक में भी बहुत-सी सूरतों में इस अति आवश्यक बोध का बहुत बड़ा अभाव है। इसलिए इस भाव से कि उनके पुराने शागिर्द नियत समय पर आराम से पहुँच सकें, जीवनदाता भगवान् ने अपने एक सेवक के द्वारा उनके पास निम्नलिखित सन्देशा भेजा, और इसमें और बातों के भिन्न इस बात का

संसार में दो वस्तुऐं बहुत ही कम पाई जाती है एक तो शुद्ध कमाई का धन और दूसरे सत्य शिक्षक मित्र।

भी ख़्याल रखा कि कहीं ख़राब मौसम में उनके पुराने शागिर्द को आने की तकलीफ़ न उठानी पड़े –

"यदि आप कल ठीक दो बजे दोपहर पीछे आ सकते हैं, तो उस समय आ जावें। और यदि आप यह समझते हों कि उस समय आने में आपको दिक्कत होगी, तो आप दो और तीन बजे के मध्य में आ सकते हैं। परन्तु आज ज़ोर-शोर से वर्षा हो रही है और हो सकता है कि कल इस समय भी मौसम ऐसा ही ख़राब हो। ऐसी सूरत में आप कल के स्थान में परसों नियत समय पर आ सकते हैं।"

भगवान् देवात्मा के उपर्युक्त सन्देश को सुनकर हैरानी आती है कि किस तरह उन्होंने अपने आराम और बे-आरामी का कुछ भी ख़्याल नहीं किया। उनके देव हृदय ने उन्हें दूसरे की हस्ती, उसके आराम और हीनताओं का विचार करके चलने के लिए मजबूर कर दिया। और इसलिए उन्होंने पूरी कोशिश की कि जहाँ तक हो सके, मिलने वाले जन सुगमता से आकर उनसे मिल सकें।

वाह! पर के सम्बन्ध में कैसा उच्च भाव!! हममें से कितने जन ऐसे हैं कि जो अपनी 'मैं' को भूलकर इस तरह पर केवल दूसरों का विचार करके चलते हैं?

– क्रमशः

तुम्हारे विचार

07 सितम्बर, 2001

आओ, देखें कि हमारे परलोकवासी सम्बन्धी हमारी सहायता किस प्रकार करते हैं। इन्सानी जीवन में तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे शुभचिन्तक, तुम्हारी तन-मन-धन से मदद करते हैं। परलोकवासी तुम्हारी मदद ज़्यादातर मंगलकामना से करते हैं, जैसे तुम्हारा काम पर पहला दिन हो, तो कुछ सम्बन्धी तुम्हारे साथ रहेंगे और तुम्हें अच्छे विचार देने का प्रयत्न करेंगे। वे तुम्हारा हौसला ऊपर रखेंगे और कोई कठिनाई आने पर सही विचारों से तुम्हें राह दिखाने की कोशिश करेंगे। भले ही हर इन्सान माध्यम (medium) होने में समर्थ नहीं होता, पर हम लोग इतनी कोशिश करते हैं कि हमारे सोचने के तरीका हमारा रवैया और सोच की दिशा उसकी समझ में आ जाते हैं, जिसकी हम मदद करना चाह रहे हैं। कई बार तुमने महसूस किया होगा कि मुश्किल के वक़्त पर कोई तुम्हें रास्ता दिखा रहा था। तुम्हें ऐसा लगा होगा कि वह तुम्हारी अन्तरात्मा

अच्छी वस्तुए प्रायः दूर पर ही मिलती है।

है, जबकि वह सहायकारी शक्तियों की मदद थी।

जैसा हम पहले भी बता चुके हैं जैसे मंगलकामना भला करती है, वैसे ही ईर्ष्या, जलन, द्वेष, दुश्चिन्ता नुक़सान करती हैं। यह नुक़सान ज़्यादातर उसका होता है, जो ऐसे विचार अपने दिल में लाता है, पर कुछ असर सामने वाले पर भी होता है। तो ऐसी हालत में जिन लोगों के प्रति तुमने अन्याय किया, जिनका हक़ छीना, जिनका शोषण किया, उनकी बद्दुआएँ तुम्हारा नुक़सान करती हैं। ये बददुआएं इन्सानी जीवन में दी जा सकती हैं और परलोक से भी। लेकिन, ये बद्दुआएँ सही कारण होने पर, उचित लक्ष्य होने पर ही असरकारी होती हैं। यदि तुम जलते-कुढ़ते हो कि तुम्हारे पड़ोसी के पास अच्छा घर, अच्छी कार है, क्योंकि वह ज़्यादा मेहनत करता है और उसके पास बेहतर काम है, ऐसे में जलने-कुढ़ने से तुम्हारा ही नुक़सान होगा, तुम्हारे पड़ोसी का कोई अहित नहीं होगा। इसके विपरीत यदि तुमने वाक़ई जानबूझकर किसी का बुरा किया हो, तो उनकी आह तुम्हारा नुक़सान करती है – तुम्हारी आत्मिक पूँजी घटाती है, तुम्हें पतन की ओर धकेलती है।

अति मोह एक और ऐसी चीज़ है, जो परलोक आकर फ़ायदे से ज़्यादा नुक़सान पहुँचाती है। अगर तुम किसी पर अन्धमोह रखते हो, अपने बच्चे, बीवी या किसी और सम्बन्धी की ओर तो परलोक में आकर उनका नुक़सान करोगे। उनका हृदय तुम्हारे मोह से विचलित होगा, चाहे उन्हें इसका राज़ न समझ में आए।

इसलिए हमें ज़रूरत है कि हम अपने नीच कर्मों पर काबू रखें, नीच गतियों से बचें, नीच भावों से अपनी आत्मा को बचाएँ और अन्धमोह न रखें। दूसरा इन्सान तुम्हारे बारे में क्या सोचता है, यह तो तुम्हारे बस में नहीं है। मगर तुम दूसरों के बारे में क्या सोचते हो और दूसरों के प्रति कैसा बर्ताव करते हो, यह पूरी तरह से तुम्हारे हाथ में है। सबके साथ अच्छा व्यवहार रखो, सबके लिए शुभ विचार रखो, इससे तुम्हारी आत्मिक पूँजी बढ़ेगी और सहायकारी शक्तियाँ भी तुम्हें लायक़ मानकर तुम्हारी मदद करेंगी।

सबका शुभ हो!

– परलोक सन्देश

बिना पराक्रम के कोई उच्च पद पर नहीं पहुँचता।

माता-पिता के प्रति
भाव प्रकाश

मेरे पास वो शब्द नहीं हैं जिनसे मैं अपने माता-पिता के उपकारों का वर्णन कर सकूँ, बस इतना ही कह सकता हूँ कि उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! और उनका आशीर्वाद हम सब पर बना रहे।

मेरी पत्नी पिछले वर्ष अचानक Heart Attack आने से परलोक चली गई। मेरे बच्चों ने अपनी माता की बीमारी में उनकी सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। दो साल से मेरी भी शारीरिक स्थिति ठीक नहीं चल रही है। मेरे दोनों पुत्र और पुत्री मेरी हर प्रकार से बहुत सेवा कर रहे हैं। ये सब भगवान् की शिक्षा और कृपा है। मैं अपने बच्चों का और बहुओं का कर्ज नहीं चुका सकता। मेरी हर प्रकार से सेवा कर रहे मेरे बच्चों का शुभ हो! भला हो! मंगल हो!

– राजेन्द्र अरोड़ा, (सूरत)

श्रद्धा व सम्मान के योग्य मेरे प्यारी माँ व पापा जी आपका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! सादर प्रणाम!

गुरु कृपा से आज जब अतीत में ख्यालों के झरोखे से देखा, तो आपके ढेर सारे उपकार नजर आये और उसमें मैंने देखा कि मेरा वजूद आपसे पैदा हुआ और आप ने अनेकों दुखों को सहन कर के मेरी पालना की, क्या शरीर के, क्या धन के अभाव में और क्या अपनी बीमारी के होते हुए भी आप दोनों ने मुझे पाला ही नहीं वरन् पढ़ाया लिखाया, सही प्रकार से मेरी रक्षा की।

माँ आप जो पापा जी की बीमारी में सेवाकारी भी होती रही, वहाँ सेवा का भाव होते हुए आप पारिवारिक जनों की व सामाजिक जनों की सेवा से भी पीछे नहीं हटी और आपने हम सब बहन भाइयों को मेहनती बनाया। आप ईमानदारी, मेहनत और साहस की मूर्ति थीं और आज भी हैं क्योंकि आपके ये गुण मैं अपने अन्दर देखती हूँ। आप मुझे बचपन से ही सतसंग में ले जाती थी, गुरुद्वारे ले जाती थीं और भजन बोलना सिखाती थीं।

शादी से पहले तो आपने सेवा की है वह तो है ही, मगर शादी के बाद भी मैंने आपसे बहुत सेवा पाई है। एक बार मेरे पेट में बहुत दर्द हुआ, तो मैं बेहट से अकेली सहारनपुर आई, डाक्टर के पास होकर, दवाई लेकर आई, मगर मुझे आराम नहीं आया आपने दो डाक्टर बदले और पानी की बोतल से मेरी कितनी बार सिकाई भी की और

जिसकी बुद्धि खोटी है उसे शास्त्र भी भला-बुरा कुछ नहीं सिखा सकता।

कोई एहसान नहीं जताया। ठीक करके ही मुझे बेहट जहाँ मेरी ससुराल थी, भेजा। एक बार मेरा बड़ा बेटा सीढ़ियों से गिर गया था तब भी मैं आपके पास आई और आपने हम दोनों की बहुत सेवा की। धन्य हैं आप माँ, धन्य हैं, आपके उपकारों का बदला मैं नहीं चुका सकती। यह पत्र भी मैं परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के देव प्रभावों में लिख रही हूँ अन्यथा यह प्रयास नामुमकिन है। आपका जीवन परलोक में सेवाकारी हो, आपका शुभ हो!

पापा जी, जो प्यार व सम्मान मुझे आपको स्थूल रुप में देना चाहिए था, नहीं दे पाई। क्षमा करना। आज जब देवात्मा ने मुझे आपका उपकारी रूप दिखाया तो मैं आपको पत्र लिखने के काबिल हुई, आपका परलोक में सदा शुभ हो!

आप ईमानदार सच्चे, धैर्यवान और सहनशील आत्मा थे और हैं। आप सरल थे और कम सामान रख कर गुजारा करने वाले थे। आप बीमार रहते हुए भी बहुत काम करते थे और घर से 20-25 किलोमीटर की दूरी में दुकान चलाते थे। जिससे अपने घर का सुख नहीं ले पाते थे। मगर फिर भी घबराते नहीं थे और हमारी जरूरतों के लिए काम करते थे। एक बार दूध उबलकर गिर गया, तो माँ गुस्सा करने लगी मगर आपने मुझे बचा लिया।

आपका शुभ हो! आपका परलोक का जीवन उच्च गतियों से भरपूर हो व आपको परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की शरण मिले!
शुभ हो! शुभ हो!

आपकी बेटी
- सुदेश खुराना (लुधियाना)

जो मनुष्य अपने साथ जैसा बर्ताव करे, उसके साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए। यही नीति धर्म है। कपट का आचरण करने वाले के साथ कपटपूर्ण व्यवहार करें और अच्छा व्यवहार करने वाले के साथ साधुभाव से ही व्यवहार करना चाहिए।

ईर्ष्या, लोभ, क्रोध एवं कठोर वचन इन चारों से सदा बचते रहना ही वस्तुतः धर्म है।

हमारे पिताजी, एक आदर्श व्यक्तित्व

हमारे पिताजी श्री धर्मानन्दजी एक बहुत ही आदर्शों वाले इंसान थे। वह बहुत ही सेवाकारी थे। उनका धर्म ही सिर्फ़ सेवा था। वह देव समाज के बहुत ही पक्के सेवक थे। पिताजी सब तरह के ऐबों से दूर थे और किसी भी ऐब में किसी की कोई सहायता नहीं करते थे। अपने हर काम में बहुत लगन थी। सदा ज़्यादातर यही गाते रहते थे। 'मेरी यह तुच्छ सी हस्ती किसी के काम आ जावे'।

उन पर गुरु महाराज जी के बहुत अधिक प्रभाव थे। तन-मन-धन से सेवा के लिए हर समय तत्पर रहते थे। अपने ग्राहकों का बहुत ख्याल रखते थे। एक बार दुकान पर किसी ग्राहक ने दुकान पर काम करने वाले वर्कर को नौकर कह दिया। पिताजी ने इस बात पर ग्राहक को बहुत डाण्टा और कहा कि वह नौकर नहीं है, नौकर तो हम सब है पेट के। दुकान पर सब काम करने वालों का बहुत ख्याल रखते थे। सबके लिए खाने का सामान दिल से मंगवाते रहते थे। छोटे से छोटा काम करने में कोई शर्म नहीं करते थे।

हमारा घर और दुकान अम्बाला शहर में देव समाज मंदिर के बहुत नजदीक था। इसलिए घर पर बहुत कर्मचारियों का आना-जाना रहता था। श्रीमान् गुरवन्त सिंह जी, विकास देव जी, जवाहर लाल जी, भगत सिंह जी, गुरु सेवक सिंह जी और भी बहुत से कर्मचारी अक्सर घर पर आते रहते थे। आने वाले कर्मचारियों की काफ़ी सेवा करते थे। पिता जी का यही उद्देश्य था कि किसी का जीवन बदलकर अच्छा इंसान बना दूँ। जब भी कहीं सत्संग होता, बहुत लोगों को साथ सत्संग में ले जाने के लिए प्रेरित करते थे। आने-जाने का ख़र्च भी कहते थे कि मैं ही करूँगा। उस समय जहाँ भी सत्संग होते, मोगा, फिरोज़पुर, चण्डीगढ़, सोलन, दिल्ली वगैरह जरूर जाते और हम छोटे बच्चों को भी साथ लेकर जाते।

श्रीमान् गुरुसेवक सिंह जी के साथ भी बहुत प्यार था। एक बार श्रीमान् जी दुकान पर आए और कहने लगे, "बाऊजी, हरदेव कुमार जी को टी.बी. हो गया है। इसलिए आप कोई मदद कर दें।" पिता जी ने श्रीमान् जी के आगे रुपयों का गल्ला खोल दिया और कहा कि श्रीमान् जी आपको जो चाहिए, ले लीजिए।

इस घटना का श्रीमान् गुरु सेवक सिंह जी अपनी सभाओं में जिक्र करते थे और पिताजी को बाऊ धर्मानन्द जी कहते थे। श्रीमान् जवाहर लाल जी का भी पिताजी के साथ बहुत प्यार था। पिताजी कर्मचारियों के साथ अपने जानने वालों के पास समाज के लिए अक्सर दान माँगने भी जाया करते थे। श्रीमान् ज्ञान देव जी का भी

जब करूणा प्राणों में बस जाती है तभी धर्म दर्शन देता है।
धर्म के विषय में ज़ोर जबर्दस्ती नहीं।

हमारे घर पर काफ़ी आना-जाना लगा रहता था।

पिताजी का अपना सारे परिवार के साथ उनके बच्चों के साथ बहुत प्यार था। वह सबके घरों में जाकर उनके छोटे-छोटे काम कर दिया करते थे और कोई भी छोटा काम करने में शर्म महसूस नहीं करते थे। पिताजी ने अपने छोटे भाई श्री रतन चंद जी जिन्हें टी.बी. हो गया था, उनके आख़िरी समय तक बहुत सेवा की। अपनी माता जी श्रीमती शंकरी देवी जी जो गुरु महाराज जी के समय में ही देव समाज की सेविका बन गई थी, उनकी आख़िरी समय में बहुत दिल के साथ बहुत सेवा की। उनके सारे गंदे कपड़े जो बिस्तर पर पड़े रहने के कारण गंदे हो जाया करते थे, पास ही तालाब पर जाकर धोकर लाते थे।

देव समाज मंदिर अम्बाला शहर में एक अन्धी बुर्जुग माता जी रहती थी, जो स्वभाव की बहुत तेज थीं, उनका राशन बाजार से लाकर देते रहते थे। एक बार राशन देने के चक्कर में मंदिर के बाहर गली में नई साइकिल खड़ी की जो चोरी हो गई। पर फिर भी राशन लाना और सेवा करना नहीं छोड़ा। अपने ग्राहकों की भी कुछ सेवा किया करते थे। उनको चाय पिलाना, खाना खिलाना और भी कोई सेवा हो तो कभी मना नहीं करना, ऐसा उनका स्वभाव था।

हमारी माता जी और ज्ञान बहन जी ने मंदिर में जाकर कोई भी सत्संग पार्टी आए, तो बहुत सेवा किया करती थीं।

कुछ समय पहले तक गुरु महाराज जी के जन्म दिवस के अवसर पर प्रभात फेरी हुआ करती थी। पिता जी कर्मचारियों के साथ बहुत दिल के साथ उन प्रभात फेरियों में जो प्रातः 05:00 बजे हुआ करती थीं। उसमें हिस्सा लेते थे और देव समाज के सेवकों के घर पर सबके साथ गाते हुए जाया करते थे और हम भी उनके साथ जाया करते थे।

उनका जीवन बहुत ईमानदारी का था। अपनी ईमानदारी के लिए अपनी जान पहचान में जाने जाते थे। मैं 13 या 14 साल का था। मैं घर की सब्ज़ी लेने बाज़ार में गया। पिताजी जिस दुकानदार से सब्ज़ी लेते थे, मैंने उसके सामने दूसरे दुकानदार से सब्ज़ी ले ली और उसे रुपये दे दिये। उसने मुझे एक रुपया जो बचा, वो वापिस नहीं किया और कहा कि मैंने एक रुपया मुझे वापिस कर दिया है। मेरी उससे बहस सी भी हो गई। उस समय एक रुपये की क़ीमत बहुत थी। उसी समय वहाँ पर हमारे जानकार पिशोरी लाल जी जो मंदिर के पास ही फलों की दुकान करते थे, आ गए और इस बात

सच्चा धर्म चट्टान पर निर्मित किया जाता है, शेषधर्म
काल तरंगों पर उछाले गए होते हैं।

का पता चलने पर उसे कहा कि इन्हें एक रुपया वापिस कर दें, यह झूठ नहीं बोलते, यह बाऊ धर्मानन्द जी के बेटे हैं। फिर उस दुकानदार ने एक रुपया वापिस कर दिया।

उनका जीवन बहुत ही सादगी भरा और बहुत ही सेवाकारी था। कोई भी आ जाए और कोर्ट में जमानत की जरूरत हो, तो जाकर जमानत भी दे देते थे। अपने भाई-बहनों की सेवा बहुत दिल से करते थे। पहले 13 साल रेलवे में नौकरी भी की, उसके बाद अपना चुड़ियों का काम किया। उनके जीवन की और भी बहुत घटनाएं है। हम सब भाई-बहनों का हर तरह से बहुत ख्याल रखा। हम सब की ज़रूरतों का बहुत ध्यान रखा। उनका जीवन बहुत ही आदर्श भरा था। ऐसे थे हमारे पिताजी!

– सरोज गुप्ता, भारत भूषण, अनिल कुमार (अम्बाला शहर)

मैं अपने स्कूल में बोर्ड से कक्षा कार्य नहीं नोट कर पाता था, तब मेरी दीदी जो उसी स्कूल में पढ़ती थीं, लंच ब्रेक में मेरी क्लास में आती थीं, बोर्ड से और कई बार दूसरे बच्चों की कॉपी लेकर नोट करती थीं। इसमें कई बार उनका लंच मिस हो जाता था। उन्होंने स्कूल में मेरे प्रोजेक्टस बनाने में बहुत मदद की। जब मेरी परीक्षा होती थी, तब दीदी कॉलेज से छुट्टी लेकर और शादी के बाद भी दीदी मुझे पढाने आती थीं। अब भी फ़ोन पर बात होती है तो दीदी यही कहती हैं – 'कोई काम हो तो बताना।'

भाई अपने आपमें ही एक अनूठा शब्द है। जब हम राजस्थान में रहते थे, तब पापा ने एक लड़के की मदद की थी। मैं उनको भईया बुलाता हूँ। बाद में मैं कक्षा दसवीं में हुआ, तब उन्होंने मेरी पढ़ाई में बहुत मदद की और अब भी फ़ोन पर मेरा हालचाल पूछते रहते हैं।

– अर्पित सिंगल (पंचकूला)

वहीं मंगल है जिसमें मन प्रसन्न हो, वही जीवन है जो पर सेवा में बीते।
वही अर्जित है जिसका भोग स्वजन करे।

दयालुतापूर्ण शब्द बोलने में छोटे और सरल हो सकते हैं,
किन्तु उनकी प्रतिध्वनियाँ सचमुच अनन्त होती है।

श्रद्धा सुमन

गतांक से आगे.....

(श्रीमान् जवाहर लाल जी के सम्बन्ध में)

श्रीमान् जी की एक अवसर पर मेरे बड़े भाई से मुलाकात हुई थी, वह एक अद्भुत संयोग था। तत्पश्चात् वह बेहट में हमारे घर पर आने लगे। सभाएं कराने लगे। लेकिन हमारे परिवार के सब पुरुष नशों में लिप्त थे तथा सत्संग सभाओं का कोई असर नहीं होता था। चूँकि श्रीमान् जी काफ़ी-काफ़ी दिनों के पश्चात् आते थे और हम नीच अनुरागों में मस्त थे, इसलिए चन्द समय का सभा सत्संग कोई प्रभाव नहीं डाल पाता था। आज उन दिनों को याद करता हूँ तो कितना दुःख होता है, जोकि बयान से बाहर है। वह सुनहरा समय और वह पल कभी नहीं आ पायेंगे। जीवन के सुन्दर दिनों को मैंने यूँ ही निष्फल लुटा दिया। मेरे शराब पीने और सब प्रकार के दुष्ट कर्मों से दुकान खाली हो गई थी, सब जीवन लुट चुका था। इसी बीच मेरी उपकारी धर्मपत्नी बच्चों को साथ लेकर बेहट के दूषित वातावरण को छोड़कर लुधियाना आ गए। एक लम्बी दास्तान है, जो यहाँ पर बयान नहीं हो सकती। बात यहाँ पर श्रीमान् जवाहरलाल जी की हो रही है। भगवान् के यह अनोखे सेवक एक थैला जिसमें भगवान् की छवि और देववाणी और अन्य पुस्तक उठाए हुए प्रचार करते रहते थे, हमें ढूँढते-ढूँढते हमारे एक छोटे से किराए के मकान पर हमारा भला करने हेतु आने लगे। बस वो आते ही स्टूल पर भगवन की छवि रखकर भजन व सभा करवाने लगते। कमाल का जीवन था और वीर पुरुष थे वह। आहिस्ता-आहिस्ता उनके द्वारा हमें भगवान् देवात्मा के प्रभाव मिलने लगे और हमारे सामने एक नई दुनिया खुलनी शुरू हो गई। कितना बड़ा वरदान! कितना बड़ा उपकार श्रीमान् जी का हम पर! आज मेरे बड़े भाई भी इस दुनिया में नहीं है, लेकिन श्रीमान् जी से उनकी एक छोटी सी मुलाकात हमें असीम दौलत का स्वामी बना गई।

- अशोक खुराना (लुधियाना, पंजाब)

It is very sad news to know about Shriman ji. As a family we have got numerous services and blessings from respected Shriman Ji. He is one of the personalities, who groomed me to follow Dev Samaj teachings. May his noble soul get all the blessings of Dharamsambandhis in parlok.

- Sudhir Pundir (Chandigarh)

निराशा भयंकर राक्षस है जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है।

माननीय श्रीमान् जी के परलोकगमन की सूचना पाकर मैं तुच्छ नि:शब्द हो गया हूँ। क्या कहूँ, कुछ समझ ही नहीं आ रहा। बस थोड़ा सा यह समझ आ रहा है कि श्रीमान् जी बहुत संघर्षशील योद्धा थे। जब तक उनके शरीर में थोड़ी सी भी शक्ति वर्तमान रही, वह भगवान् के मिशन के लिए हृदयगत भावों से सेवाकारी रहे। प्रकृतिमाता उन्हें अपनी विशाल गोद में उच्च से उच्च लोकों में स्थान प्रदान करे। श्रीमान् जी को महान् धर्म सम्बन्धियों का भव्य साथ प्राप्त हो। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! हम सबको परलोक से उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। श्रीमान् नवनीत जी तथा उनके परिवार ने श्रीमान् जी की सेवा करके जो प्रिय एवं हितकर दृष्टान्त प्रस्तुत किया है, वह भी सबके लिए उच्च प्रेरणादायक है। क्या कहूँ मेरे पास शब्द ही नहीं रहे। लगता है आज हम सचमुच बूढ़े हो गए। उनके रहते हुए अपने आपको बच्चे समझते थे। आप पिता-पुत्र दोनों स्थूल जगत् में हमारे लिए आध्यात्मिक - आईकॉन हैं। श्रीमान् जी का परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! तथा उनका आशीर्वाद हमें सदा प्राप्त होता रहे।

- चन्द्रगुप्त (अम्बाला शहर, हरियाणा)

Navneet ji, Satya Dev Ki Jai! Very sorry to hear about the sad demise of Shrimanji. I have known him since I was a small child and he bestowed abundant love and affection on me. I have some of the fondest memories of him. I am so glad he chose to devote himself fully to spreading Guru Maharaj Ji's mission and because of that he instilled the same spirit in you as well! I offer my heartfelt condolences.

- Dr. Vineet Khera, (D/O Shriman Prem Bal Ji Khera)
Former Professor, Punjab University, Chandigarh

आपके आदरणीय पिता जी के देहान्त की सूचना मिली। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रद्धेय कुछ समय से अस्वस्थ थे। पिछले कुछ समय में, मुझे श्रद्धेय से दो बार मिलने का अवसर मिला। उनके सरल व्यक्तित्व की अमिट छवि आज भी एक धरोहर है।

- सुशील मिथल (मेरठ, यू.पी.)

दु:ख स्वयं ही एक औषधि है।

"As is a tale, so is a life: Not how long it is, but how good it is, is what matters."“Well done Babaji". You are good, faithful and always on my mind. I have met you for a short duration. And it's pleasure and blessing for me to meet amazing beautiful soul like you babaji.
Forever in our hearts.

- Ms. Priya Singh, Delhi
Research Scholar, IIT Roorkee

श्रीमान् जी के देहान्त की सूचना पाकर बहुत दुःख हुआ है। वह परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सेना के वीर सिपाही थे। अनथक प्रचारक और परोपकारी थे। उन्होंने भगवान् देवात्मा के मिशन की बड़े लम्बे समय तक सेवा की। मुझे उनके साथ जगह-जगह प्रचार में जाने का सौभाग्य मिला। मैंने उनसे बहुत सेवा पाई और बहुत कुछ उनसे सीखा है। वह सफ़ाई और सुश्रृंखला के बोधी आत्मा थे। उनकी मधुर स्मृति मेरे दिल में बसी है।

वह बहुत सूझ-बूझ वाले थे। बहुत सादगी का जीवन बिताया। प्रचार में कभी पैदल कभी बस से कभी रेल से लम्बा सफर किया। गाँव-गाँव में जाकर गुरु मिशन का प्रचार किया। उनका सारा ही जीवन परसेवा में बीता। मैं हृदयगत भावों से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूँ।

- के0 एस0 चौहान (श्री अकबरपुर, यू.पी.)

श्रद्धाजंलि सभा

मिशन के श्रद्धावान व हमारे सहयोगी परलोकवासी श्री पी.सी. गुप्ता जी (रुड़की) की सुपुत्री श्रीमती मंजू मित्तल जी का 29 अप्रैल, 2021 को प्रायः 69 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया था। 21 मार्च, 2022 को हरमिलाप धर्मशाला, रुड़की में उनके सम्बन्ध में श्रद्धांजलि सभा रखी गई। डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने भावपूर्ण उद्बोधन दिया। 'अटल सत्य' एवं 'कृतज्ञता का दृष्टिकोण' पुस्तकों की 200 प्ररतियाँ परिवार की ओर से सप्रेम वितरित करवायी गई। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो।

यदि इन्सान में अन्दरूनी योग्यता है, अच्छा ज्ञान है तो लोग अपने आप ही उसका सम्मान करेंगे।

प्रेरणास्पद उद्‌बोधन सेवा

25 फरवरी, 2022 को गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, नोएडा द्वारा Faculty Development Program के अन्तर्गत Stress Management and Happiness विषय पर प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। विभिन्न कॉलेजों के प्राय: 90 प्राध्यापक लाभान्वित हुए। सबका शुभ हो!

श्राद्ध सभा

श्रीमती हर्ष बाला जी गुप्ता (देहरादून) के शोकप्रद देहान्त के उपरान्त उनके सम्बन्ध में श्राद्ध सभा 14 जनवरी, 2022 को डॉ. नवनीत जी ने ऑनलाइन जूम मीटिंग पर करवाई। काफ़ी संख्या में धर्म साथी जुड़े तथा पारिवारिक जन लाभान्वित हुए। परिवार की ओर से 5000/- रु0 मिशन को दान स्वरूप भेजे गए। माननीय श्रीमती हर्षबाला जी का परलोक में शुभ हो!

श्रीमान् प्रकाश चन्द जी अरोड़ा (चौंदा, (संगरूर) पंजाब) के पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार उनके गांव में 18 फरवरी, 2022 किया गया। इस अवसर पर डॉ0 नवनीत अरोड़ा जी ने शुभ कामना करवाई। तत्पश्चात् 'अटल सत्य' से जुड़े उद्‌बोधन व शुभकामना प्रतिदिन सायं ऑन लाइन 26 फरवरी तक करवाई जाती रही। इसे कोओर्डनेट (co-ordinate) करने की सेवा सुश्री अनीता जी ने की। 27 फरवरी को स्थानीय गुरुद्वारे में उनके सम्बन्ध में श्राद्ध सभा रखी गई। इस मौके पर 20 मिनट डॉ. नवनीत जी भावपूर्ण उद्‌बोधन दिया तथा शुभकामना करवाई। आपने बताया कि हर चीज़ का हम अकसर प्लान करते हैं, लेकिन मृत्यु बिना प्लानिंग व मुहूर्त के आती है। इसलिए सदा तैयार रहना चाहिये। परोपकार की कमाई जीवन में सच्चा सौदा है। ऐसी शिक्षा गुरु नानक जी ने भी अपने जीवन के उदाहरण से दी है। आपके जीवन की ही एक घटना है कि कैसे एक कंजूस सेठ को आपने यह कहकर समझाया और जगाया था कि एक लोहे की कील मुझे ला दो, लेकिन देना मुझे परलोक में। एक छोटी सी कील भी साथ नहीं जाती। परलोक सत्य है। परलोकवासी सत्य है। उनके साथ हमारा सम्बन्ध भी सत्य है। तत्पश्चात् 'परलोक दे सम्बन्धियों नू असी नहीं भूल जावांगे' के पद वाला गीत गाया व व्याख्या की। आपने यह भी स्पष्ट किया कि नशे, वासना, धन-धरती व मोह का अनुरागी आत्मा इसी लोक से बंधा रहता है तथा परलोक नहीं जा पाता। आपके उद्‌बोधन का एक-एक शब्द हृदयों को हिला रहा था।

अन्त में 'हे देहत्यागी सम्बन्धी हमारे' के पद वाला भजन गाया तथा देहत्यागी के लिए शुभकामना की गई।

ऋण, अग्नि और शत्रु शेष रह जाने पर बार-बार बढ़ते हैं,
इसलिए उनमें से किसी को शेष नहीं छोड़ना चाहिए।

माता-पिता सन्तान व्रत

इस वर्ष भी कोरोना की 3rd wave आ जाने के कारण यह व्रत साधन ऑनलाइन ही रखा गया। 21-23 जनवरी तीन साधन सत्र रखे गए। 21 जनवरी को एक शाम माता-पिता के नाम में कितने ही जनों ने बहुत सुन्दर व हृदयस्पर्शी भजनों का गान किया, जोकि माता-पिता के बारे में थे। मेहुल बंसल (नोएडा), काव्य एवं शानवी (हरिद्वार), पूर्वा एवं पावनी (बेहट), अंशु टहिलरामानी (भोपाल), सुगन्धि अरोड़ा (रुड़की), श्वेता सहगल (हरिद्वार), रिजुल (नोएडा), गुरु चरण सिंह (पदमपुर), सीमा शर्मा जी (रुड़की), चन्द्रगुप्त जी (अम्बाला शहर) एवं डॉ. नवनीत जी एवं जवाहर जी टहिलरामानी जी ने भजनों का गान किया।

22 जनवरी को रात्रि 08:30 बजे साधन सत्र का विषय था - 'मेरा परिवार और मैं'। डॉ. नवनीत जी ने सिलसिलेवार उद्बोधन में इस तथ्य को स्पष्ट किया कि चार सूत्रों को सीखकर हमारे परिवार में सकारात्मकता व स्वर्ग का एहसास हो सकता है, वे हैं - 1. सुनने की कला, 2. समझने की कला, 3. सुनाने की कला, 4. समझाने की कला।

23 जनवरी को प्रात:10 बजे से 12 बजे तक माता-पिता सन्तान पर्व मनाया गया। डॉ. नवनीत जी ने भावपूर्ण साधन करवाया।

इन साधनों में जूम मीटिंग की अधिकतम सीमा 100 थी जोकि भर जाने पर शेष जन यूट्यूब से लाभान्वित होते रहे। एक-एक साधन में 500 परिवार तक लाभान्वित हुए। सबका शुभ हो!

भाई-बहन का सम्बन्ध

20 फरवरी, 2022 को प्रात: 10:30 बजे भाई-बहन का पर्व मनाया गया, जिसमें जूम व यूट्यूब पर प्राय: 400 परिवार लाभान्वित हुए। डॉ. नवनीत जी के द्वारा भावपूर्ण उद्बोधन दिया गया।

शोक समाचार

शोक का विषय है कि हमारे पुराने साथी सेवक श्री ओम प्रकाश जी (सुपुत्र श्री हरी राम जी, बठिण्डा) का प्राय: 70 वर्ष की आयु में 03 मार्च, 2022 को देहान्त हो गया। उनके सम्बन्ध में शुभकामना का साधन 10 मार्च, 2022 को जूम मीटिंग के माध्यम से डॉ. नवनीत जी अरोड़ा ने करवाया। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

ठीक समय पर प्रारम्भ की गई नीतियाँ अवश्य ही फल प्रदान करती हैं।

अखबारों के रजिस्ट्रेशन एक्ट के नियम 8 के अनुसार 'सत्य देव संवाद' के विषय में आवश्यक ब्यौरा

1. स्थान जहाँ से अखबार प्रकाशित होता है – रुड़की (उत्तराखण्ड)
2. प्रकाशन की अवधि – मासिक

3. प्रिंटर का नाम – ब्रिजेश गुप्ता
   राष्ट्रीयता – भारतीय
   पता – 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की

4. पब्लिशर का नाम – ब्रिजेश गुप्ता
   रास्ट्रीयता – भारतीय
   पता – 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की

5. सम्पादक का नाम – डॉ0 नवनीत अरोड़ा
   राष्ट्रीयता – भारतीय
   पता डी-05, हिल व्यू अपार्टमेन्ट्स, आई.आई.टी., परिसर, रुड़की

6. अखबार के मालिक का नाम और पता – डॉ0 नवनीत अरोड़ा
   डी-05, हिल व्यू अपार्टमेन्ट्स, आई.आई.टी., परिसर, रुड़की

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311), सहारनपुर (98976-22120), गुवाहटी (94351-06136), ग़ाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला (98145-02583), चण्डीगढ़ (0172-2646464), पदमपुर (09309-303537), अम्बाला (94679-48965), मुम्बई (9870705771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (70094-36618)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242